DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant Professor
Deptt. of Sanskrit
S.R.A.P. College, Baracharia
BRABU – Muzaffarpur

B.A. (Hons.) Part – I
Sub. – SANSKRIT
Paper – I
कारक सूत्र - व्याख्या
(तृतीया विभक्ति)

5X3 = 15 Marks

10. प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम् (वार्तिक)

'प्रकृति' वर्ग के शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। इस वर्ग के अन्तर्गत प्रकृति, स्वभाव, आकृति, जाति, नाम, प्रायेण, गोत्र, सुख, दुःख आदि शब्द आते हैं। यथा – प्रकृत्या चारुः (प्रकृति - स्वभाव से ही सुन्दर) – यहाँ प्रकृति को ही सुन्दरता का कारण / साधकतम माना है, अतः उससे 'प्रकृत्यादिभ्य उपसंख्यानम्' वार्तिक से तृतीया हुई। पुनश्च - स्वभावेन कर्कशः, आकृत्या शोभनः, जात्या क्षत्रियः, नाम्ना गोपालः, प्रायेण अदृश्यः, गोत्रेण गार्ग्यः, सुखेन मग्नः, दुःखेन व्यथितः इत्यादि। यहाँ उक्त वार्तिक से स्वभावेन, आकृत्या, जात्या, नाम्ना, प्रायेण, गोत्रेण, सुखेन, दुःखेन – इत्यादि में तृतीया हुई है।

11. अपवर्गे तृतीया (2/3/6)

अपवर्ग शब्द का तात्पर्य है – फल की प्राप्ति या क्रिया की सिद्धि। फल प्राप्ति अथवा क्रिया की सिद्धि के अर्थ में अत्यन्त संयोग होने से कालवाचक एवं मार्गवाचक (अध्ववाचक) शब्दों में तृतीया विभक्ति होती है। यथा – मासेन व्याकरणम् अधीतम् – एक महीने में व्याकरण पढ़ लिया। क्रोशेन पुस्तकं समाप्तवान् – कोस भर में किताब समाप्त कर ली – अर्थात् पुस्तक कोस भर लगातार पढ़कर उसने समाप्त कर ली। यहाँ फल की प्राप्ति का बोध्य होने के कारण और क्रिया की निरन्तरता का बोध्य होने से कालवाची और मार्गवाची शब्दों के योग में 'अपवर्गे तृतीया' सूत्र से तृतीया विभक्ति हुई है।

क्रमशः जारी